[Placed in Library. *See* No. LT-193/96]

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI V. NARAYANASAMY): There will be a statement by the External Affairs Minister at 5 p.m. on CTBT. This is for the information of hon. Members.

RE: GOOD WISHES TO MOTHER TERESA FOR SPEEDY RECOVERY FROM HER ILLNESS.

SHRI S. PETER ALPHONSE (Tamil Nadu): Mr. Vice-Chairman, Sir, I thank you for having granted me this opportunity of wishing one of our very great souls who has become a history during her own lifetime, a very happy birthday.

Mother Teresa, a living saint and an embodiment of all that is good in human life, celebrates her 86th birthday today. As a noble person who has tirelessly fought against poverty and hatred, she has won the lover and affection of the entire country irrespective of caste, creed and religion. We are really sad that she has been hospitalised for some illness and her health has become a cause of anxiety for the entire nation. On behalf of the Members of this House and, with your permission, I would like to wish herd happy birthday and also pray for her early recovery. We wish her a long life and good health.

SHRIMATI JAYANTHI NATRAJAN (Tamil Nadu): Sir, I just want to associate myself with my colleague, Mr. Peter Alphonse, to say that Mother Teresa is a beloved person, a person of peace and of love for her fellow human beings. We are all worried that she is seriously ill and is in the hospital. On the occasion of her birthday, we would like to convey our good wishes to her and pray for her speedy recovery.

THE LEADER OF THE OPPOSITION (SHRI SIKANDER BAKHT): Kindly make an announcemnet from the chair...(*Interruptions*)...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI V. NARAYANASAMY): I also join the hon. Members in wishing her a happy birthday today. I also pray to God on behalf of all the hon. Members for her speedy recovery. She is a great soul who has served humanity, especially the poorer sections of the people.

Now we will take up the death of pilgrims to Amarnath Yatra...(*Interruptions*)... Shri Vijay Kumar Malhotra...(*Interruptions*)...Mr. Ahluwalia, you are third. Mr. Vijay Kumar Malhotra gave notice prior to you. The second speaker is Shri Shiv Charan Singh...(*Interruptions*)...

SHRI S.S. AHLUWALIA (Bihar): I had given the notice first...(*Interruption*)...

SHRI G. SWAMINATHAN (Tamil Nadu): We were informed by the Chairman that a statement will be made by the hon. Minister and thereafter we could speak. That is what we understood. That is why I did not give my name...(*Interruptions*)...

THE VICE-CHAIRMAN:(SHRI V. NARAYANASAMY): I will include your name...(*Interruption*)...

SHRI G. SWAMINATHAN: All of us have been under this impression. The Chairman said that a statement will be made by the Ministger and thereafter, we could seek clarifications. We are all waiting for the Minister...(*Interruption*)...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI V. NARAYANASAMY): The Chairman allowed hon. Members to raise the issue in the House during the Zero Hour. Those who have not given their names can give them now. They can also associate theselves. Mr. Vijay Kumar Malhotra, please be brief. There are nine Members who want to speak.

REFERENCE TO THE DEATH OF PILGRIMS OF AMARNATH YATRA

प्रो॰ विजय कुमार मल्होत्रा (दिल्ली): उपसभाध्यक्ष जी, मैं जब बोलने के लिए खडा होता हं तो आप दो

मिनिट बाद बोलना शुरू कर देते हैं। यह मामला ऐसा नहीं है।

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI V. NARAYANASAMY): Please go to the subject.

प्रो॰ विजय कुमार मल्होत्रा: अभी मैं शुरू भी नहीं करता, बैल बजनी शुरू हो जाती है।

उपसभाध्यक्ष महोदय, एक बहुत ही भीषण ट्रेजडी हुई है। अमर नाथ यात्रा पर गये हुए लाखों यात्रियों में से 160 से करीब, सरकारी आंकड़ों के अनुसार, यात्रियों की मृत्यु हुई है, सैकड़ों अस्पतालों में पड़े हुए हैं, हजारों इस समय वहां पर घिरे हुए हैं। जो आंकड़े गैर सरकारी हैं, उनके मुताबिक मरने वालों की संख्या 400 से ऊपर है और बहुत ही भीषण परिस्थितियों में वहां पर ये लोग इस समय हैं।

उपसभाध्यक्ष महोदय, मैं जानता हूं कि वहां पर वर्षा हुई है, बर्फ भारी हो गई जिसके कारण वहां पर लोगों की मृत्यु हुई है परन्तु यह केवल दैवी प्रकोप नहीं है। हम लोग इसका ठीक से इंतजाम नहीं करते हैं। हम लोग इसको एंटिसिपेट नहीं कर सके, जो कि हमें अच्छी तरह से करना चाहिये था। यह केवल पहली दुर्घटना नहीं है। 1970 में इसी प्रकार की दुर्घटना पहले हो चुकी है। उसके अन्दर भी बहुत से लोग मरे थे और उसके बाद कहा गया था कि आगे से ऐसी दुर्घटना नहीं होने दी जायेगी। क्यों नहीं वहां पर उचित प्रबन्ध किये गये? वहां के जो हालात इंडियन एक्सप्रैस और दूसरे अखबारों में दिये गये हैं उनसे स्पष्ट है कि वहां पर कोई सड़क नहीं है केवल पगडंडियों के जरिये दो-ढाई फीट चौड़े रास्ते से लाखों यात्री वहां जाते है और उसी तरह से उस रास्ते से वापस आते हैं। वहां पर घोड़ा, पालकी, पिट्ठू और पैदल यात्रियों को, सभी को उस रास्ते से जहां पर हजारों फीट गहरे खड्ड हैं, जाना पड़ता है।

उपसभाध्यक्ष महोदय, मैं कहना चाहता हूं कि इस मौके पर अगर सरकार ने इन सबका प्रबन्ध किया होता अगर इसको एंटिसिपेट किया होता या जब पहले दिन बारिस हुई, वर्षा के शुरू होते ही यह अंदाजा लगा लिया जाता है कि यह घटना हो सकती है तो उसको रोकने का इंतजाम हो सकता था। ये बहुमूल्य जानें बचाई जा सकती थी। सरकार ने यह नहीं किया। तीन दिनों तक सरकार सोई रही और जब जागी तब तक बहुत ज्यादा देर हो चुकी थी। आज होम मिनिस्टर चार दिन बाद वहां पर जा रहे हैं, चार दिन के बाद वहां पर जाने का प्रयास कर रहे हैं। वहां पर सारे रास्ते में कहीं किसी हास्पिटल का कोई इंतजाम नहीं किया गया और यह सोचा गया कि पहलगाम या चंदनवाड़ी या शेषनाग या पंचतरणी में थोड़ा इंतजाम कर दिया जाए। जब रास्ते टूट गए और लोग बीच में घिर गए तो उनके लिए न दवाइयों का इंतजाम था, न खाने का इंतजाम था और न उन लोगों को लाने का इंतजाम था। वे लोग वहां पर एड़ियां रगड़कर मरते रहे, चिल्लाते रहे लेकिन कोई उनको देखने वाला नहीं था, कोई उनको बचाने वाला वहां पर नहीं था। उपसभाध्यक्ष महोदय, वहां पर सरकार ने पहले इंतजाम क्यों नहीं किया, कोई रास्ता क्यों नहीं बनाया। मैं इसमें मुकाबला नहीं करना चाहता परन्तु हज यात्रियों के जाने पर सरकार 40-50 करोड़ रुपये खर्च करती है लेकिन अमरनाथ की यात्रा पर जो लोग गए उन पर 50 रुपया जजिया लगा दिया गया। पहली बार यह किया गया कि 50 रुपया हर यात्री को देना पड़ेगा। आपने उनके ऊपर 50 रुपये लगाने के बाद भी वहां पर रास्ता ठीक करने के लिए और बाकी इंतजाम के लिए एक पैसा भी खर्च नहीं किया, कोई इंतजाम नहीं किया। जब यात्री पिस्सू घाटी के ऊपर चढ़ते हैं तो एक फुट की पगडंडी है, जिस पर लाखों आदमियों को जाने को मजबूर होना पड़े। उपसभाध्यक्ष महोदय, उसके बाद भी न रेलों का इंतजाम हुआ और न कोई और इंतजाम हुआ। वहां से कोई स्पेशल ट्रेन तीन दिन बाद तक भी जम्मू से लोगों को लेकर दिल्ली नहीं आ सकी। एक भी एडिशनल ट्रेन नहीं चलाई। आज, शायद, पहली ट्रेन वापस आएगी। वहां पर सात नार्मल ट्रेनें चलती हैं। वहां से किसी एडिशनल ट्रेन चलाने की जरूरत नहीं थी। एडिशनल ट्रेनें न चलाकर वहां पर जब बात बढ़ गई तो हवाई जहाजों के जरिए या हैलीकाप्टरों से लोगों को निकालने का काम किया गया।

उपसभाध्यक्ष महोदय, मैं बहुत गंभीरतापूर्वक कहना चाहता हूं कि यह ट्रेजडी जो हुई है, इसको बचाया जा सकता था और ये लोग बच सकते थे। यह सरकार जो इन नृशंस हत्याओं के लिए जिम्मेदार है, इस सरकार को इस्तीफा देना चाहिए और गृह मंत्री को त्यागपत्र दे देना चाहिए। वहां के गवर्नर दिल्ली में बैठे हुए हैं। वहां के चीफ सेक्रेटरी दिल्ली में बैठे हुए हैं। वहां पर कोई मिलेटरी को लगाने के लिए तैयार नहीं था। मिलेटरी को कांटेक्ट करने वाला वहां पर कोई नहीं था। दुर्घटना के दो दिन बाद, तीन दिन बाद यह मिलेटरी के हवाले किया गया। आज कहा गया है कि मिलेटरी के हाथ में यह पूरी तरह से दे दिया जाएगा। अगर पहले ही दिन मिलेटरी के हाथ में दे दिया होता तो यह स्थिति नहीं होती। छड़ी मुबारक हमेशा सबसे पहले जाती है और छड़ी मुबारक के पीछे सारे यात्री जाते हैं। छड़ी मुबारक को हवाई जहाज के जरिए वहां पर पहुंचाने की कोशिश की जा रही है जब कि यात्रा खत्म हो गई है या यात्रा खत्म कर दी गई है। यात्रा खत्म हो गई है या खत्म कर दी गई है इसमें भी कंट्राडिक्शन है। दो-तीन दिन तक टी॰वी॰ कहता रहा कि यह यात्रा खत्म कर दी है और आज कहा गया कि यात्रा चालू रहेगी। यानी यह भी सरकार को मालूम नहीं है कि यात्रा सस्पेंड है, खत्म है या चालू रहेगी। जो लोग जम्मू मे हैं, जो लोग ऊधमपुर में हैं वे लोग आगे बढ़ें या

वापस आ जाए, इसके बारे में कोई इन्फर्मेशन देने वाला नहीं है। इतनी बद-इंतजामी के लिए सरकार को इस्तीफा देना चाहिए और सरकार को इसकी जिम्मेदारी पूरी अपने ऊपर लेनी चाहिए।

श्री शिव चरण सिंह (राजस्थान): मान्यवर महोदय, अमरनाथ में जो कुछ हुआ है या माननीय मल्होत्रा जी ने बताया। वहां के गवर्नर की नेग्लीजेंस देखिए, वे तीन-चार दिनों तक दिल्ली में बैठे रहे और वह वहां अपना चार्ज या अपनी जिम्मेदारी किसी को संभलवाकर नहीं आए कि अगर इमरजेंसी में कोई घटना घट जाए तो कौन उसको देखेगा। इतनी बड़ी घटना घटने के बाद उन्होंने कोई परवाह नहीं की, इतने आदमियों के मरने के बाद कोई परवाह नहीं की और जिन के लोग मरे हैं उनको सूचना तक नहीं दी गई। आज आपको अखबारों से पता चला होगा कि दिल्ली के मुख्य मंत्री ने उनको यहां लाने की जिम्मेदारी ली है और उसका सारा खर्चा दिल्ली सरकार वहन करेगी। कश्मीर की सरकार, भारत सरकार को इतनी कर्टसी तक भी नहीं है कि वे मरने वाले लोगों को यहां लाये और उसका खर्चा वहन करें। एअर इंडिया या इंडियन एयरलाइंस को उनको यहां लायें और खर्चा उठायें। वहां पर यात्रियों के लिए रेल के वैगन भी नहीं पहुंचे और जो पहुंचे वे कम वैगन थे, इसलिए यात्री वापस नहीं आ सके। बस के रास्ते बंद थे रेल के अलावा कोई चारा नहीं था। यह जो घटना घटी है यह बहुत शर्मनाक है और केन्द्र सरकार को इसकी जिम्मेदारी अपने सर पर लेनी चाहिए और तत्काल इस्तीफा देना चाहिए।

श्री एस० एस० अहलुवालिया (बिहार): उपसभाध्यक्ष महोदय, अमरनाथ यात्रा में दर्शनार्थियों के साथ जो कुछ भी घटना घटी है, बड़ी दुर्भाग्यपूर्ण है। पहले भी उज्जैन में धर्मार्थियों और दर्शनार्थियों के साथ जो घटना घटी या हरिद्वार में घटना घटी, वहां पर यह देखने में आया कि सरकारी बंदोबस्त बहुत ढीला रहता है जिसके कारण यह दुविधाएं दर्शनार्थियों को होती है। अमरनाथ भारत का बहुत बड़ा तीर्थ स्थान है, जहां हर साल श्रावण मास में लाखों लोग सारे भारत से आते हैं, कन्याकुमारी से आते हैं कच्छ से आते हैं, कोहिमा से आते हैं। सब लोग वहां शिव की अराधना करने के लिए वहां जाते हैं, जल चढ़ाने जाते हैं। उस अमरनाथ यात्रा में श्रावण की पूर्णिमा के नज़दीक आते जाते भीड़ का दौर बढ़ता जाता है, यात्रियों का दौर बढ़ता जाता है। मैं इसलिए यह बात उठा रहा हूं कि आज हमारे पास दो दिन, तीन दिन, चार दिन के बाद, कैसा क्लाइमेट रहेगा, उसका आभास कराने के लिए सेटेलाइट हैं और सेटेलाइट के माध्यम से हम अनाऊंसमेंट करते है, व्यवस्था करते हैं पर इस केस में हमारे यहां की कश्मीर सरकार की जो व्यवस्था थी, वह बिलकुल फेल कर गई है। वहां पर उन्होंने कोई ऐसी व्यवस्था नहीं की। जब उन्हें पता लगा कि बारिश हो रही है, उस बारिश में फिसलन है, चढ़ाई है, छोटी-छोटी पगडण्डियां हैं, वहां लोग फिसल कर गिरते हैं, किसी तरह से वह यात्रा भगवान शिव का नाम लेते हुए, बोल बम का नारा लगाते हुए, भगवान शिव की अराधना करते हुए शिव लिंग के दर्शन करने के लिए वहां पर उपस्थित होते हैं। परन्तु उनकी जो व्यवस्था है वह धार्मिक लोग ही करते हैं। आपने देखा होगा यात्रा के पूरे रास्ते में जो धार्मिक लोग हैं या जो डिवोटी हैं, जो शिव के उपासक हैं, वे लोग खाने की व्यवस्था, चाय की व्यवस्था, कॉफी की व्यवस्था करते हैं। वहां जो दर्शनार्थी लोग जाते हैं उनकी व्यवस्था करते है। मैं यह पूछना चाहता हूं कि उनके लिए सरकार की क्या व्यवस्था होती है? सरकार की व्यवस्था से जब अनाऊंसमेंट हो रही थी, जब लोग मर रहे थे, ठंड से कांप रहे थे, कोई डाक्टर उपलब्ध नहीं था, दवा उपलब्ध नहीं थी, कोई टेंट उपलब्ध नहीं था, लैड-स्लाइड हो रहे थे, पत्थर गिर रहे थे, वृक्ष गिर रहे थे, उस वक्त कैम्पों में रहने के लिए कोई जगह ही नहीं थी। अनाऊंसमेंट क्या हो रही थी कि आप सब यात्री लोग कैम्पों में शरण लें। कैम्पों में जगह नहीं थी। बार बार यह अनाऊंसमेंट हो रही थी कि अगर आपको कैम्पों में घुसने नहीं दिया जाए तो आप आ कर रिपोर्ट करें। इसका मतलब यह हुआ कि कैम्पों में उनको घुसने नहीं दिया जा रहा था क्योंकि केम्पों में जगह ही नहीं थी। इतनी बड़ी संख्या में दर्शनार्थी वहां जाते हैं लेकिन उनके लिए व्यवस्था नगण्य थी, बहुत कम व्यवस्था थी। वहां पर लोग ठहर नहीं सकते थे। आरोप यह लगाया कि जो मारे गये हैं वह गरीब लोग थे, साधु थे, अधनंगे थे, उनके शरीर पर कपड़े नहीं थे। क्या था, क्या नहीं था, यह सारी व्यवस्था सरकार की तरफ से उनके लिए की जानी चाहिये थी। सरकार द्वारा लोगों को इस बात के लिए आगाह किया जाना चाहिये था कि ऊपर जा कर बर्फ गिर सकती है, ठंड पड़ने वाली है, बारिश होने वाली है। मैं यह जानना चाहता हूं कि क्या उनको इस बात के लिए आगाह किया गया था? इसकी पूरी छानबीन करने की जरूरत है। और भी दुर्भाग्यपूर्ण बात यह है कि आज पांचवां दिन हो गया है, सरकार अब तक सोई हुई है। कल जब पता लगा कि संसद् का सत्र प्रारम्भ हो रहा है तो गृह मंत्री को यह निर्देश हुआ कि

वहां जा कर देख कर आएं और अभी तक वहां के कर्मचारियों और अफसरों ने क्या किया है, वह सब इस सदन के सामने रखें। गृह मंत्री जी जब अपनी रिपोर्ट ले कर आएंगे तब आएं किन्तु उसके पहले इस सदन के सामने पूरी रिपोर्ट रखी जाए कि वहां के यात्रियों के लिए क्या व्यवस्था की गई थी। समुचित व्यवस्था के न होने के कारण इतने लोगों की जानें चली गईं। जिस शिव के आशीर्वाद से लोग उम्र मांगते हैं, जिस शिव के आशीर्वाद से एक निस्संतान मां बच्चे की दात मांगती है, जिस शिव के आशीर्वाद से लोग स्वस्थ जीवन मांगते हैं, शिव की उपासना करते हुए हमारी अव्यवस्था के कारण लोग मारे जाएं, यह बड़ा दुर्भाग्यपूर्ण है। मैं चाहता हूं कि इस पर एक हाई लेवल इन्क्वायरी हो और इस इन्क्वायरी में जो लोग दोषी पाए जाएं उनके खिलाफ कड़ी से कड़ी कार्यवाही हो। किन्तु उससे पहले आज सदन में सरकार ने जो व्यवस्था पिछले चार दिनों के अन्दर की, उसका विवरण सदन के सामने रखा जाए ताकि हम इस पर पूरी बहस कर सकें। धन्यवाद।

श्री राघवजी (मध्य प्रदेश): उपसभाध्यक्ष जी, आज दिन तक किसी प्रशासन द्वारा इतना अपराधिक लापरवाही का मामला नहीं देखा गया जैसे इस बार देखने को मिला है। पिछली बार भी इस सदन में उज्जैन और हरिद्वार के मामले की चर्चा हुई थी। वहां पर दर्जनों लोग अव्यवस्था के कारण मारे गए थे। तब शासन पक्ष की ओर से यह कहा गया था कि अब ऐसे मौके कभी नहीं आने देंगे। लेकिन अभी कुछ महीने भी नहीं बीते हैं कि उसके बाद एक ऐसा मौका आ गया जिसमें 400 लोगों के मरने की आशंका व्यक्त की जा रही है। आज भी वहां 90 हजार यात्री फंसे हुए हैं, उनको निकालने की कोई व्यवस्था नहीं है। रेल विभाग सो रहा है। कोई स्पेशल ट्रेनों की व्यवस्था वहां पर नहीं की जा रही है और जो यात्री मारे गए हैं वे केवल धार्मिक यात्री नहीं थे। आतंकवादियों को चुनौती देते हुए, अपना सीना आगे करते हुए यात्रा के लिए प्रशस्त हुए थे एक दो की संख्या मे नहीं बल्कि डेढ़ लाख की संख्या में ऐसे साहसी नागरिक हिंदुस्तान से वहां पर निकले थे। वहां पर उनकी सुरक्षा का प्रबंध होना चाहिए था। लेकिन कोई प्रबंध आज तक नहीं किया गया। इतने वर्ष बीत गए, रास्ते सुधारने के लिए कोई व्यवस्था नहीं की गयी। रास्ते ठीक प्रकार से सुधारे जाते, पड़ावों की व्यवस्था होती, दवाई की व्यवस्था होती, मौसम कैसा हो रहा है इसकी जानकारी समय-समय पर होती रहती तो यह दुर्घटना जो घटी है वह नहीं घटती। फिर मुआवजा क्या दिया जा रहा है? जो रायट्स में मारे जाते हैं, दंगों में मारे जाते हैं उनको दो लाख रुपए का मुआवजा मिलता है और इन यात्रियों के लिए केवल 50 हजार रुपए की घोषणा की गयी है। इन लोगों के लिए क्यों नहीं दो लाख रुपए के मुआवजे की घोषणा की जाती है। दूसरा, लाशों को वहीं पर जलाया जा रहा है। रिश्तेदारों को बुलाकर उनको सौंपने की व्यवस्था नहीं है। इसलिए लाशों को रिश्तदारों को सौंपने की व्यवस्था की जाए यह मेरी मांग है। मुआवजे की जो राशि है यह 50 हजार रुपये से बढ़ाकर कम से कम 2 लाख रुपए की जाए और ट्रेनों की, हवाई जहाजों तथा हेलीकाप्टर्स की व्यवस्था इतनी पर्याप्त की जाए कि यात्री सुविधा से अपने-अपने घरों पर पहुंच सकें। आज भी 90 हजार यात्री इस यात्रा में फंसे हुए हैं। यह जो अपराधिक लापरवाही हुई है इस पर सरकार को तुरंत त्यागपत्र देना चाहिए। वहां के गवर्नर को हटाना चाहिए और जिम्मेदारी अधिकारियों को जिन्होंने लापरवाही बरती है उनको हटा देना चाहिए। दुर्भाग्य की बात यह है कि इसकी सूचना सेना को समय पर नहीं दी गयी। 40 घंटे बीत गए। सेना इंतजार करती रही कि उनकी मदद मांगी जाए। लेकिन उनकी मदद नहीं मांगी गयी। बहुत विलम्ब से मदद मांगी गयी। अगर समय पर मदद मांगी गयी होती तो यह दुर्घटना जो इतनी बड़ी हुई है इतनी नहीं होती। इसलिए यह अपराधिक लापरवाही है इसके लिए दोषी व्यक्तियों को सजा देनी चाहिए। सरकार को तुरंत त्यागपत्र देना चाहिए यह मेरी मांग है।

श्री सुरेश पचौरी: (मध्य प्रदेश): मान्यवर, हमारे देश में हमेशा श्रधा और भक्ति भाव से श्रद्धालु तीर्थ स्थानों पर जाते हैं। ऐसा ही एक तीर्थ स्थान अमरनाथ है जहां बहुत ही श्रद्धा और भक्तिभाव से सनातन धर्म में विश्वास रखने वाले लोग भगवान महादेव की आराधना करने वहां जा रहे थे। तेज बारिश, बर्फ गिरने, कड़ाके की ठंड और जमीन धंसने की वजह से वहां यह अप्रत्याशित बात हुई जिसकी वजह से हजारों लोग काल के गाल में चले गए। मान्यवर, हजारों तीर्थ यात्री पंचतरणी और शेषनाग में फंस गए जहां से बमुश्किल उन्हें पास में सोनमर्ग पहुंचाया गया। जो लोग भगवान महादेव के दर्शन करने एवं अपनी मनोकामना पूर्ति के लिए अमरनाथ गए थे उनमें से अधिकांश के परिवार अनाथ हो गए। अमरनाथ में जाकर परिवार अनाथ हों यह बात बड़ी अकाल्पनिक लगती थी लेकिन सरकारी अव्यवस्था की वजह से यह सब भी हो गया। हमारे यहां जैसे हमारे साथी अहलुवालिया जी ने बताया कि इससे पहले भी ऐसी दुर्भाग्यजनक बात हुई थी। उज्जैन और हरिद्वार में भी ऐसी ही बात हुई थी। उसके बाद

सरकार को सचेत हो जाना चाहिए था जहां भारी संख्या में लोग बड़ी श्रद्धा से तीर्थ यात्री जाते हैं ....।

वहां पहले से ही समुचित व्यवस्था सावधानी के बतौर की जानी थी और खास तौर से ऐसे मौसम में, क्योंकि सावन के महीने में अमरनाथ में श्रद्धालु जाते हैं, इसलिए मौसम विज्ञान का सहारा लेना बहुत आवश्यक था। यह जानना बहुत आवश्यक था कि आगे आने वाले कुछ दिनों में कितनी बारिश होगी और जो कड़ाके की ठंड पड़ेगी उसकी वजह से वहां की जमीन पर किस प्रकार का प्रभाव पड़ेगा। यह संभावना पहले से ही व्यक्त की जा रही थी बल्कि यदि वहां के स्थानीय समाचार-पत्रों और पत्रिकाओं को देखें तो उनमें इस बात को जाहिर किया गया था कि अमरनाथ के यात्री कई प्रकार की विषम परिस्थितियों से गुजर सकते हैं। एक परिस्थिति यह थी कि आतंकवादियों ने उनको धमकी दी थी कि अमरनाथ यात्रा नहीं करने देंगे। सरकार उन आतंकवादियों की धमकी से निपटने के लिए पुलिस की व्यवस्था में एक तरफ लगी रही, परन्तु दूसरी तरफ जमीन धंस सकती है, मौसम किस प्रकार का होगा, उसका सामना करने के लिए एहतियात के तौर पर क्या कदम उठाए जाने चाहिए, पहले से पर्याप्त संख्या में हेलीकॉप्टर की कितनी व्यवस्था होनी चाहिए, मिग-17 हेलीकॉप्टर कुछ कितने लोगेंगे बल्कि वे पर्याप्त संख्या में भी नहीं थे, जब लोग पंचतरणी और शेषनाग में फंस गए तो सोनमर्ग पर पहुंचाने के लिए कुछ मिग-17 हेलीकाप्टर प्रयोग में लाए गए। लेकिन वे भी पर्याप्त संख्या में नहीं थे। आज की तारीख तक, आज की सुबह तक महोदय, मैं जानकारी दे रहा हूं, अभी तक पर्याप्त हेलीकाप्टर की व्यवस्था नहीं की गई। यह स्थिति है और मिलिट्री को .... जो रेस्क्यू आपरेशन में इंस्ट्रक्शंस लोकल एडमिनिस्ट्रेशन की तरफ से मिलने चाहिए जब तक वे नहीं मिलते हैं तब तक डिफेंस फोर्सेस एक्टिव नहीं हो पाती हैं। तो जो लोकल एडमिनिस्ट्रेशन की तरफ से पर्याप्त इंस्ट्रक्शंस मिलने चाहिए वे इंस्ट्रक्शंस डिफेंस फोर्सेस को डिफेन्स पर्सनल्ज़ को आज की सुबह तक प्राप्त नहीं हो पाए थे और उसका नतीजा यह है कि 40 से अधिक शव तो पंचतरणी से बलटाल लाए गए और बहुत ज्यादा संख्या में शव अभी भी वहां हैं। यह बात कही गई कि उनको 50-50 हजार रुपये कंपेसेशन दिया जा रहा है। मौत की कोई कीमत नहीं होती मान्यवर, लेकिन जैसा मेरे पूर्व वक्ताओं ने बताया कि जो तीर्थ यात्री बड़े श्रद्धाभाव से वहां गए उन्हें कम से कम दो लाख से पांच लाख के बीच में कंपेसेशन दिया जाना चाहिए, क्योंकि यह बहुत दुख की बात है जो हर-हर महादेव का जयकारा लगा रहे थे स्थिति वहां ऐसी हो गई कि लोग बचाओ-बचाओ से त्राहि-त्राहि कर रहे थे। जो हमारा देश धार्मिक परंपराओं के लिए जाना जाने वाला देश है वहां यह सब हो तो यह सब हमारे लिए बहुत दुर्भाग्यज़नक है।

मान्यवर, मैं एक बात कह कर अपनी बात समाप्त करना चाहूंगा। हमारे मध्य प्रदेश से भी कई तीर्थ यात्री वहां दर्शन करने के लिए गए थे। कई परिवार बहुत चिंतित थे, हमने वहां के पुलिस नियंत्रण कक्ष जो कि पर्याप्त स्थिति में काम नहीं कर रहा है, जिसका टेलीफोन नं० 452138 दे रखा था, हमने वहां टेलीफोन किया। हमारे प्रदेश के लोग चिंतित थे। वे हमारे माध्यम से जानकारी चाहते थे। कोई जिम्मेदार व्यक्ति उस पुलिस नियंत्रण कक्ष में नहीं था। उसके पास कोई सूची नहीं थी कि कितने लोग मृतक हुए हैं। कोई जिम्मेदार आदमी यह बताने को तैयार नहीं था कि कितने लोग मारे गए हैं। इस प्रकार गैर जिम्मेदाराना ढंग से पहले भी सरकार ने काम किया है। यह हादसा होने के बाद फिर पुलिस नियंत्रण कक्ष में बैठे हुए लोग गैर जिम्मेदाराना ढंग से काम करें यह अपने आप में बहुत दुर्भाग्यपूर्ण बात है। इसलिए मैं आपके माध्यम से सरकार से यह निवेदन करना चाहूंगा, यद्यपि सरकार अपना स्टेटमेंट दे लेकिन सरकार को यह सुनिश्चित करना होगा कि भारी संख्या में श्रद्धाभाव से जब तीर्थयात्री कहीं जाते हैं तो एहतियात के तौर पर, सावधानी के तौर पर पूर्व संकेत और संभावनाओं की .... **(व्यवधान)** जानकारी लेते हुए सरकार को समुचित कदम उठाने चाहिएं और सरकार को इस संबंध में वक्तव्य देना चाहिए और जिन अधिकारियों की ड्यूटी वहां लगी थी उनके खिलाफ एक्शन होना चाहिए और जो गवर्नर साहब लंबे समय तक दिल्ली में बैठे रहे, सीधे वहां नहीं गए, उनसे भी इस मामले में जांच तलब करनी चाहिए।

धन्यवाद।

श्री अजीत जोगी (मध्य प्रदेश): उपसभाध्यक्ष महोदय, यह हृदय-विदारक घटना जोकि प्रशासन की बदइंतजामी और गैर-जिम्मेदाराना कार्यवाही की पराकाष्ठा का प्रत्यक्ष प्रमाण है, उस के बारे में मेरे माननीय मित्रों ने पूर्व में कहा है। मैं उस की पुनरावृत्ति न करते हुए केवल एक-दो बातें अपनी ओर से जोड़ना चाहता हूं।

उपसभाध्यक्ष महोदय, एक बात तो बिल्कुल स्पष्ट है कि यह जो कुछ हुआ वह केवल नैसर्गिक कारणों या

प्राकृतिक कारणों से नहीं हुआ है बल्कि पूर्वानुमान न किए जाने, सही प्रशासनिक व्यवस्था नहीं करने और बद-इंतजामी के कारण इतनी बड़ी दुर्घटना हुई। इसलिए यह जरूरी नहीं है कि कोई प्रशासनिक जांच कर के हम संतुष्ट हो जाएं या कोई न्यायिक जांच कर के संतुष्ट हो जाएं। महोदय, यह पूरे देश की आस्था और भावना से जुड़ा हुआ प्रश्न है और इस की पुनावृत्ति न हो, इसलिए मैं आप के माध्यम से यह निवेदन करता हूं कि संसद के दोनों सदनों की ओर से ज्वाइंट पार्लियामेंटरी कमेटी बनायी जाए जो कि इस घटना के कारणों को देखे कि बद-इंताजमी क्यों हुई और इस के लिए कौन लोग जवाबदेह थे?

महोदय, हम दुख प्रकट कर देते हैं, शोक प्रकट कर देते हैं, अपनी भावनाएं प्रकट कर देते हैं, पर जो लोग जवाबदेह होते हैं, उन पर कोई कार्यवाही नहीं होती और फिर इस तरह की घटनाएं होने लगती हैं। इसलिए यह काम संसद को अपने हाथ में ले चाहिए। यह जांच और किसी को न सौंपकर संसद के दोनों सदनों की कमेटी बनाकर यह जांच हमें करनी चाहिए और जवाबदेही तय करनी चाहिए और इस जांच के कार्य के पहले एक-दो बातें और की जानी चाहिए। महोदय, मैं माननीय सदस्यों से बिल्कुल सहमत हूं कि मुआवजे की राशि 50 हजार बहुत कम है। हम मनुष्य के जीवन की कीमत भी अलग-अलग रूप में आंकने लगे हैं: कहीं मरने पर 2 लाख रुपए देते हैं और कहीं 5 लाख रुपए देते हैं, लेकिन यहां हम सिर्फ 50 हजार रुपए दे रहे हैं। महोदय, यहां 2 लाख की मांग की गयी है। मैं इस बात को दोहराना चाहूंगा कि इस से पहले कि यह जांच स्थापित की जाए, सब से पहले ऐसे लोग जो प्रभावित हुए हैं, उन के परिवार के लोगों को कम-से-कम 2 लाख रुपए की मुआवजा राशि दी जाए। महोदय, मैं प्रशासन में रहा हूं, इसलिए मैं जानता हूं कि जब भी ऐसी परिस्थिति उत्पन्न होती है, जब परिस्थिति हाथ से निकल जाती है तो हमें सेना की तत्काल मदद लेनी चाहिए। महोदय, कानून और व्यवस्था की स्थिति के लिए भी सेना की तत्काल मदद ली जाती है और सेना की मदद लेने की लिए जब तक डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट सेना को रिक्वीजीशन नहीं करते तब तक सेना मदद नहीं कर सकती। महोदय, वहां सेना एलर्ट खड़ी हुई थी, पर जिलाधिकारी ने सेना को रिक्वीजीशन नहीं किया। यह क्यों नहीं किया, इस बात की तह में भी जाना चाहिए। महोदय, मैं इस बात से भी सहमत हूं कि जब इतनी बड़ी दुर्घटना हो रही थी, जम्मू-काश्मीर के राज्यपाल ने इस तरफ ध्यान नहीं दिया। वे केवल आतंकवादियों से इन यात्रियों को, इन श्रद्धालुओं को बचाने की तरफ अपना ध्यान लगाए हुए थे। उन का आने-जाने की व्यवस्था की तरफ ध्यान नहीं था। यह भी एक गंभीर त्रुटि उन की ओर से हुई है और प्रशासन से इस के लिए इंतजाम की जो अपेक्षा थी, वह बिल्कुल नहीं देखी गयी। महोदय, मैं 4-5 दिन पूर्व हरिद्वार गया था। मैने वहां देखा कि बहुत बड़ी संख्या में यात्री अमरनाथ यात्रा पर पिछले वर्षों की अपेक्षा जा रहे थे। इस बार 3-4 गुना लोग गए थे। शायद इस के पीछे उत्तर प्रदेश में बनाया गया धार्मिक माहौल एक कारण रहा होगा जिस कारण इतनी बड़ी संख्या में लोग वहां जा रहे थे।

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI V. NARAYANASAMY): Kindly conclude.

श्री अजीत जोगी: इसलिए इंतजाम को ठीक करना था, मैने प्रारंभ में ही इस बात में कहा था और उन बातों की पुनरावृत्ति नहीं करना चाहता, उन्हें दोहराना नहीं चाहता। लुब्बे-लुबाब यह है कि, सार यह है कि ज्वाइंट पार्लियामेंटरी कमेटी से इस की प्रोब होनी चाहिए और जो भी इस घटना के लिए जवाबदेह हैं, उन को दंडित किया जाना चाहिए। मृतकों के परिवारजनों को मुआवजा राशि तत्काल दी जानी चाहिए, अधिकारियों पर तत्काल कार्यवाही होनी चाहिए और गवर्नर पर तत्काल कार्यवाही होनी चाहिए।

SHRI SURINDER KUMAR SINGLA (Punjab): Mr. Vice-Chairman, Sir, this is not the first tragedy of its kind. Almost every Member of this House who spoke on this incident has expressed his views and quoted the incidents of Haridwar and Ujjain where tragedies at religious congregations had happened. The Government should have learnt a lesson from those tragedies, but it did not. That is why I am really wondering whether I should address this issue to the Government at all. As was rightly stated by my colleague, Shri Ajit P.K. Jogi, let there be a Joint Committee not only for this particular incident but also for all religious *melas* and congregations. I supplement to what Mr. Jogi has said. Let a religious fund be created at the national level to treat all faiths equally-not just, a certain faith by giving Rs. 50 crores to help pilgrims to be comfortable on their

visit to religious places. Why not people of all religions be treated equally? Let there be a Central Government fund, may be, around a hundred crores of rupees or two hundred crores of rupees through which facilities could be created. Everybody knows that on the way to Amarnath, there is no road route built for the past fifty years. It is possible to build one if you are interested in avoiding tragedies of this kind in future. You cannot stop people from going because it is such a revered place for Hindus. You cannot stop them by saying that a number of natural calamities take place. We have to have a permanent answer where pilgrims of all faiths are fully respected. Let there be proper facilities given to all people.

Sir, I would say that this tragedy should not be ignored. An inquiry needs to be ordered to find out why it happened.

It should not have happened. It should have been avoided. Ujjain and Hardwar incidents are fresh in our memory.

Secondly, India's Home Minister has gone to Kashmir today. It is more than four days. What was he doing in Calcutta? Was it such an urgent matter that he could not really fly over to Kashmir? I think, the responsibility is so much. I have been repeating quite often that India's Home Minister does not really find time to attend to national emergencies. As I have said, the Government must explain when the Home Minister is going to make a statement-as to what the circumstances are that led to this tragedy. Partly it is a natural calamity, one would share the concern on that. The other aspect is of avoiding such tragedies taking place. There should have been precautionary measures taken by the Government. They were not. I expect the Government to explain the circumstances that led to this ghasty tragedy. It is shameful to say that even today, three days after the incident took place, rescue operations are not in full swing. Only a small number of people have been airlifted from that area. There are no arrangements. My friend Mr. Pachouri was saying that he was worried. He was mentioning about one telephone number. I can tell him and share with the whole House that Kashmir House does not have any information on anything. People want to know what happened to their relatives, what happened to their brothers and sisters. There is no system to enquire about. Neither the Government of India nor anybody else has opened up any office. There have been incidents in this country when Government of India opened up offices to tell the latest information. In this case, neither the Government of India nor the State Government of Jammu and Kashmir through the Kashmir House has done anything. Is this the way to deal with such a national tragedy?

Lastly, I would request you, and through you the Government, that the Government should create a fund with a minimum amount of Rs. 200 crores to provide facilities for pilgrims who go to religious places. Otherwise, such tragedies would recur in future. This should not be allowed to happen.

DR. BIPLAB DASGUPTA (West Bengal) Sir, I share the sentiments expressed by the Members on this tragedy. I do not wish to repeat the same points again and again. I also agree that the compensation given should be adequate enough.

But even the maximum amount of compensation you can think of will not bring back the people who have died. An administrative inquiry of some sort has to take place. We have to decide whether what has happened could have been predicted or not and whether proper administrative meausres have been taken or not. So, again the question arises what form this inquiry should take. I am expressing an opinion on it. I do not think this is a subject for a Joint Parliamentary Committee, as some of the friends have

suggested. Certainly, some sort of administrative inquiry has to take place to find out whether there have been any administrative lapses. I fully share....*(Interruptions)*...

SHRI AJIT P.K. JOGI: Why not JPC? ...*(Interruptions)*

DR. BIPLAB DASGUPTA: It is my opinion..... *(Interruptions)*... You may not agree to it....*(Interruptions*.... This is my opinion.

SHRI AJIT P.K. JOGI: Because the Home Minister is from your party.... *(Interruptions)*....

DR. BIPLAB DASGUPTA: Do not politicise the issue. ....*(Interruptions)*...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI V. NARAYANASAMY): Mr. Jogi, let him make his point ....*(Interruptions)*....Kindly do not interrupt.

DR. BIPLAB DASGUPTA: Some Members are trying to politicise this issue ...*(Interruptions)*... We are discussing a tragedy and some Members are politicising it.

PROF. VIJAY KUMAR MALHOTRA: How can you defend the Home Minister? ...*(Interruptions)*... How can you defend him?...*(Interruptions)*....इस ट्रेजेडी के लिए जिम्मेदार कौन है?

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI V. NARAYANASAMY): Let him make his point....*(Interruptions)*....

SHRI VISHNU KANT SHASTRI (Uttar Pradesh): He has visited the place only now....*(Interruptions.)*.... He should have visited the place earlier. मंत्री जी को जाना चाहिए था....(व्यवधान)

उपसभाध्यक्ष (श्री वी॰ नारायणसामी): शास्त्री जी, आप बैठिए ना...(व्यवधान)

SHRI SURINDER KUMAR SINGLA: Who is responsible if the Home Minister is not responsible? .....*(Interruptions)*.... Is the Governor not responsible? ...*(Interruptions)*...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI V. NARAYANASAMY): One minute, please. ...*(Interruptions)*... The Minister of Parliamentary Affairs wants to say something.

SHRI AJIT P.K. JOGI: Is the Governor not responsible? *(Interruptions)*... Is the Home Minister not responsible? ....*(Interruptions)*...

श्री राघवजी: गृह मंत्री अपनी जिम्मेदारी से कैसे बच सकते हैं?

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI V. NARAYANASAMY) Mr. Ajit Jogi, kindly take your seat.

SHRI AJIT P.K. JOGI: They do not want a JPC because they want to save the Home Minister. ....*(Interruptions)*...

VICE-CHAIRMAN: (SHRI V. NARAYANASAMY): *Mr. Jogi, please take your seat. The Minister for Parliamentary Affairs wants to say something*. ..*(Interruptions)*....

SHRI SURINDER KUMAR SINGLA: Sir, I want to ask only one thing. ....*(Interruptions)*...

SHRI VICE-CHAIRMAN (SHRI V. NARAYANASAMY): When the Home Minister, comes, he will reply ...*(Interruptions)*...Kindly take your seat now. ...*(Interruptions)*... The Minister for Parliamentary Affairs wants to make his point. Mr. Singla, take your seat please.

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF URBAN AFFAIRS AND EMPLOYMENT AND MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF PARLIAMENTARY AFFAIRS (DR. U. VENKATESWARLU): Sir, I am thankful to you for giving me this opportunity. ...*(Interruptions)*....

श्री एस॰एस॰ अहलुवालिया: इतने दिन ये क्या करते रहे? ...(व्यवधान)

DR. U. VENKATESWARLU: Sir, Government is equally concerned about the incident that has taken place. Sir, the hon. Home Minister has been to this spot.
...(Interruptions)....

SHRI SURINDER KUMAR SINGLA: What was he doing earlier? ....*(Interruptions)...*

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI V. NARAYANASAMY): Kindly take your seat. I told you this earlier also ....*(Interruptions)...*

SHRI AJIT P.K. JOGI: Sir, people were dying there and the Home Minister.....*(Interruptions)....*

SHRI SURINDER KUMAR SINGLA: What was he doing for the last four days? ....*(Interruptions)*....Sir, I have only one question to put .....*(Interruptions.)*....

THE VICE-CHAIRMAN(SHRI V. NARAYANASAMY): When the Home Minister comes, he will reply. Now let the Minister for Parliamentary Affairs say something. If you do not want to listen to him, I would ask him to sit down.

SHRI AJIT P.K. JOGI: When Rome was burning Nero was fiddling....*(Interruptions)...*

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI V. NARAYANASAMY): Do you want to hear the Minister or not? If you do not want to hear him, then I will ask Dr. Biplab Dasgupta to speak.

श्री एस०एस० अहलुवालिया: 4 दिन तक क्या किया है इन्होंने? इन 4 दिनों में क्या कार्यवाही की गई? क्या रिलीफ वर्क किया? क्या प्रिकाशंस लिए?

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI V. NARAYANASAMY): Kindly sit down...*(Interruptions)* I cannot control you. Kindly take you seat.

SHRI SURINDER KUMAR SINGLA: What was he doing for the last four days?

SHRI P.K. JOGI: When Rome was burning, Nero was fiddling. ...*(Interruptions)....*

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI V. NARAYANASAMY): Mr. Singla, you have made your point. ....*Interruptions)*... Do not rise everytime. ....*(Interruption)...*

DR. U. VENKATESWARLU: Sir, I am not going to make a detailed statement on this subject. I want to share information with the House that the hon. Home Minister had been to this spot this morning. ...*(Interruptions)...*

Sir, he may return at any moment and this evening he may make a detailed statement on that. Any clarification on that issue can be asked only after the statement is made. At this point of time, let the hon. Members make a mention...*(Interruptions)...*

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI V. NARAYANASAMY): I told Mr. Biplab to speak. You had your chance. You kindly take your seat. You have to speak whenever permission is given to you. Mr. Singla, you cannot jump up every time.

DR. BIPLAB DASGUPTA: Sir, one of the reasons why this kind of tragedy keeps on recurring is because of the problem of information and the administration does not always give the information to the pilgrims. I think one of the things which people going from the plains do not know is that the weather conditions in the hills can change within 24 hours or even there may be a change within 10 hours.

SHRI S.S. AHLUWALIA: What is Meteorological Department doing? Crores and crores of rupees are spent on Meteorological Department...*(Interruptions)*...Why was information not shared with the pilgrims?

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI V. NARAYANASAMY): Mr. Ahluwalia, kindly take your seat. He is an hon. Member and he has the right to speak...*(Interruptions)*...

SHRI SURINDER KUMAR SINGLA: Why is he talking about weather changes within 24 hours or 10 hours? Is he a weather scientist?

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI V. NARAYANASAMY): Mr. Singla, I cannot call you several times to sit down(Interruptions)...
Whatever Mr. Singla says should not go on record.

DR. BIPLAB DASGUPTA: One of the first things that the Government should do is to inform the pilgrims about the weather conditions. This they have not done probably. This is something which should be done as a matter of urgency in the future pilgrimages whenever they are arranged. Similarly, my view is that not only Pilgrims should be told about the requirements for garments, which they may not know, but also there must be some arrangement for the supply of garments on hire at different points as many people may not be able to afford them. There should be a system for providing the garments on hire along the journey so that while they are coming back they can return those garments. This system can help a large number of people who are going there and who may not have the money to buy those garments.

Similarly, regarding accommodation, I feel that sometimes, not only for this particular pilgrimage but also for pilgrimages in other parts of the country, we take things for granted. Rather than taking this for granted, we should take into account such disasters which have been happening quite regularly in our country, when a large number of people gather, then millions of people gather, and there is not enough administrative organisation to sort out their problems such as water supply, sanitation and also other requirements including the sort of things which lead to accidents. I agree with the sentiments expressed by some the hon. Members. So, I would certainly like the Government to give the issue the maximum amount of importance that it deserves. Information, which is very important, should
be given to all the pilgrims regarding the "dos" and "dont's", which is not done. This can be done in the form of leaflets and all that.

Another point which has been made by our friend, Shri Pachouri, is regarding availability of information. I think, now, the relatives of people who have gone on this pilgrimage are worried. They want to know what has happened to them. There has to be a properly installed and managed system of giving information to the relatives regarding what has happened to whom, who has died, who is injured, who is where, when they are going to come back, etc. Such information should be made available.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI V. NARAYANASAMY): Kindly conclude, Mr. Biplab Dasgupta.

DR. BIPLAB DASGUPTA: I am concluding. In conclusion, I would request the Government to take into account the suggestions made by me.

SHRIMATI RENUKA CHOWDHURY (Andhra Pradesh): Mr. Vice-Chairman, Sir, thank you for permitting me to associate myself with the sentiments expressed by my hon. colleagues.

श्री लक्ष्मीराम अग्रवाल (मध्य प्रदेश): उपसभाध्यक्ष महोदय, मैंने भी नोटिस दिया है।

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI V. NARAYANASAMY): The names are there. I am calling as per the list.

श्रीमती रेणुका चौधरी (आन्ध्र प्रदेश): यह क्या है।....(व्यवधान)

श्री एस० एस० अहलुवालिया: चेयर से टाईम मांग रहे हैं....(व्यवधान)

SHRIMATI RENUKA CHOWDHURY: I cannot express adequately my anguish over the tragedy that had taken place. Of course, my hon. colleagues have made several, very valuable, suggestions. We had an acrimonious debate as to the rightness and wrongness in handling this. Somewhere along we lost our way and we added a little political colour also to it.

The tragedy lies in the attitude of various Government at various levels. When such a tragedy takes place, we seem to think that the people of our country, the citizens of our nation, going on a pilgrimage is their private matter. We seem to think that the Government has no accountability in regard to it. This is not correct.

Sir, the cultural glory of this nation lies in the fact of its diversity. A person goes to a place of worship not because of his so-called religious belief, but he goes with fervour. The tolerance of so many people enables him to go and come back in peace.

It is indeed tragic that these pilgrims who had gone to Amarnath were put to so much of hardship; and worse, many of them have died. The tragedy lies in the fact that such disasters happen again and again.

Of course, these pilgrims who have died while on pilgrimage to Amarnath have joined the others who have died in such disasters earlier in different parts of the country. But the fact that such a thing is allowed to happen repeatedly shows that we do not pay enough attention to prevent such tragedies. This shows that we do not remain sensitised to the needs of the people. The tragedy lies therein.

It is, no doubt, important that we make use of the technology to make predictions about the weather. Similarly, we must make available to the pilgrims proper garments. But what is more important is the assurance that every person must have that he could go to a place of worship and faith and come back safely. This is where the nation's character is revealed. A person who goes on a pilgrimage should be able to go and come back safely; the people in his family must feel assured about that.

Therefore, Sir, through you, I would request the Government that even if it takes time, they should set this right so that Parliament is not witness to such a tagedy ever again—not just in regard to Amarnath, but nation-wide—so that the citizens of the country could undertake such pilgrimages without any hardship and difficulty.

Thank you, Sir.

SHRI G. SWAMINATHAN (Tamil Nadu): Mr. Vice-Chairman, Sir, on behalf of my Party and on my own behalf, I convey our sympathy to the families of the 153 pilgrims who have died in this tragedy.

Sir, the people who are very close to the North and to the Himalayas know the terrain of the place. Though the people like me who come from Tamil Nadu or Kerala do not know exactly the terrain, we are able to understand, and sympathise with, the hardship and the difficulties caused to the pilgrims.

Most of the points have already been covered by my esteemed colleagues. Therefore, I would make only a few points, very briefly.

One of the points made here is that the Government had not taken adequate care. No advance planning had been there. This point was reiterated by almost all the Members. There is one point I wish to make. It has been reported in this morning's newspapers that two of the Ministers, Shri Indrajit Gupta and Shri Chaturanan Mishra—he was my neighbour; I have a great regard for him—are not staying in their offices. They are going about places. They do not have time to see the files. The newspapers report that the files are piling up because

they are not available in the office. These two Ministers are just moving around and not attending to their work. Naturally, planning cannot be done regarding pilgrims. I am only quoting the newspaper. They cannot do their job; they do not see files if they are not in Delhi ....*(Interruptions)*....

SHRIMATI RENUKA CHOWDHURY: The Ministers did not go there for the last three days.

SHRI G. SWAMINATHAN: My point is that they have been appointed recently as Ministers. I do not want to say that they have been going about to welcome-meetings but they are being congratulated for becoming Ministers. But if it continues, Sir, I would like to warn the Government that then slowly they will have to go for valedictory meetings. And then they will have only meetings and there will be no work in between. The weather has changed. I could see, Sir, the weather has changed. The weather not only in Amarnath, the weather of the political climate is also changing, the party which is supporting them, the major party which is supporting them. I do not worry about what is happening within the Government. I am very much worried about the party which is supporting it from outside with about 140 members. They are going to pull its legs, as they did elsewhere, and the climate will become very cloudy and it is as bad as ....*(Interruptions)*.... It is not a question of Telugu Desam supporting or not supporting—that is a different matter altogether. The important matter, Sir, is that the Government will be there as long as it is supported from outside. As it has been said, it has been supported by a major party from outside. The climate is becoming very rough. I would only wish to say that I am very much worried because the only thing that Shri Indrajit Gupta has so far done is to withdraw the security cover to some people, including our former Chief Minister. To one person he gives and from one person he withdraws. I do not want to go into it. I am only sorry that he is not able to attend to real matters. He is only attending to matters which are not real. Certainly this kind of things are happening. So advance planning had not been there. Again I would only say that an Expert Committee should be appointed, even if it is going to be a Joint Committee to enquire into whether it is the Government or the Governor or the Home Minister or whether they are the Ministers concerned or the Government concerned who are responsible for this great tragedy. Whosoever had been responsible for the great tragedy, action should be taken. It has been said that a Parliamentary Committee has to be constituted so that people higher up cannot escape. Of course, people higher up have escaped even before Parliamentary Committees. There had been a Joint Committee but then, after the findings of the Joint Committee the higher-ups have escaped. But this time, Sir, I would want both. I want a Parliamentary Committee should be appointed and if they find that anybody who is a higher up has also done some mistake, he should not be allowed to escape. That is what I want to say. My second point is ....*(Interruptions)*....

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI V. NARAYANASAMY): The last point.

SHRI G. SWAMINATHAN: Only one point. The point is that it is not only a matter of Amarnath but this is the case everywhere. When my wife and children went to Badrinath in the beginning of the season they were put up in a place where it was so bad and they found it very difficult. So tragedies have happened. In Ujjain recently a tragedy of an enormous proportion has happened. It has been said that in Haridwar a tragedy of an enormous proportion has happened. In the Tirupati temple, Sir, in the South, normally such tragedies do not happen — it has happened. In Ayyappa temple also a tragedy has happened. In Kerala the people are very careful but there also a tragedy has happened. Wherever there has been a congregation of people and pilgrims, you do not take enough care

because you do not care for people's lives; so this has been happening. I would like that a committee has to be appointed to see that action is taken. Regarding these deaths whatever action has to be taken, you should follow it up. On behalf of my party and on my own behalf I convey my sympathies to the families of the people who have died, and I wish that all other pilgrims who are yet to come, should come back safely. This is what I want to say. (Ends)

SHRI TRILOKI NATH CHATURVEDI (*Uttar Pradesh*): Mr. Vice-Chairperson, I like to remind you that in the tragedy that has really occurred, a point particularly escaped our notice and attention. In a stretch of about six kilometres from Panchtarani to the holy cave; it is a small stretch of six kilometres only where most of these deaths have taken place.

1.00 P.M.

Sir, there are rivulets, and there is a very small road—I think, of 2½ ft. width—in this area, which is given every year to the contractors. And the bridges which are built and the roads are washed away. This is the callous attitude of the Government; this is the casual approach. There has been failure of the administration in advance planning, as was said, before the pilgrimage began, during the pilgrimage itself and after the pilgrimage, that is, when the tragedy struck these people and there was a need for rescue and relief operations. This was so at all stages.

I have a few points to make, I am sorry, but I won't take much time.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI V. NARAYANASAMY): One minute. It is now one o'clock. There are three, four names listed to speak on this subject. If hon. Members agree, we can extend the sitting by a few more minutes so that the Members can speak.

SHRI TRILOKI NATH CHATURVEDI: This attitude is also shown by the fact that from Udhampur to Pahalgam also there was a shortage of provisions all along and a black-market had almost sprung up there. So, this is the way the Government was taking note of a serious situation!

The third thing I would like to say is that there were already threats from the militants and that's why, to meet those threats and to cope with that kind of a situation, probably, this year there were a larger number of people going there, apart from the faith that has been mentioned. But what happens, unfortunately, is that many a time the Government itself puts off and puts on the pilgrimage and no proper information is given, with the result that there is so much confusion about proposed arrangements within the Government ranks themselves.

I would also like to bring to the notice of this House—and it was very well said—that the tragedy should have been anticipated and action should have been taken because of what happned in Hardwar, what happened in Ujjain and what had happened in 1970 in this particular area itself. But, unfortunately, nothing of that sort was done and, I would say, there was a real collapse of the administration. I am very sorry to say that the Governor himself was here till Sunday, till yesterday. During this period, when the papers were saying all this, your All-India Radio—Mr. C.M. Ibrahim's radio—was also broadcasting all this, about yatra, but the Governor was here. Not only that. It is very unfortunate that the Chief Secretary himself was here—he had come for the Plan discussions. Could he not have left this work to other colleagues of his, to discuss the matters with the Planning Commission? What happened as a result was that there was a collapse at the district level, as was pointed out by my friend, Mr. Jogi. There was a collapse of administration at the State level because there was nobody

available at the State level, senior enough to take the necessary initiative to instruct the District Magistrate, with the result that no liaison was made with the Army at the proper time and the Army was not alerted.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI V. NARAYANASAMY): Kindly conclude, Chaturvediji. This is only Zero Hour business.

SHRI TRILOKI NATH CHATURVEDI: One minute more, Sir. I would also like to mention that another unfortunate thing was the collapse at the Central level. I do not want to bring in what the papers have said and other things but, even if the hon. Home Minister was not in a position to go there, could not some senior officers from the Home Ministry go there? The Governor of a particular State attends the political meetings.

And what about the Prime Minister? Was not the Prime Minister informed of this tragedy? Instead of roaming about in U.P. or elsewhere, could he not have gone to those places where such a tragedy struck the people, which has struck the soul of the nation? And this humble Prime Minister who pretends to be a humble farmer, did not bother about the humble people, the humble farmers from Kanyakumari who had gone to those places! Is it not a farce that you are playing?

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI V. NARAYANASAMY): Kindly conclude.

SHRI TRILOKI NATH CHATURVEDI: I would also like to mention one more thing.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI V. NARAYANASAMY): There is going to be a clarification.

SHRI TRILOKI NATH CHATURVEDI: It is the responsibility of the Home Minister. The responsibility is of the Prime Minister because this is a Prime Ministerial Cabinet, this is a Prime Ministerial executive because here I have seen the Prime Minister refuting the Home Minister...

...and two Ministers, Mr. Chaturanan Mishra and another Minister trying to pick up arguments and counter-arguments in this particular place. I do not want to go into the internal matters of the party. But the fact is that nothing moves without the Prime Minister. The Prime Minister who is going to give relief to the poor of this country and develop this country, first owes this responsibility to the nation. He should resign and express regrets for what has not been done under his aegis when he was responsible for this.

SHRI AJIT P.K. JOGI: Shrimati Renuka Chowdhury is in the Prime Minister's chair.

SHRI TRILOKI NATH CHATURVEDI: I think she will make a better Prime Minister. I have no doubt about her capabilities.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI V. NARAYANASAMY): Mr. Chaturvedi, kindly conclude.

SHRI TRILOKI NATH CHATURVEDI: Sir, I am finishing.

The most shameful aspect has been the relief operation. The security committee is separate. The relief operations are separate. The Army is doing something else; it is doing its best under the circumstances. I wish it had been given this leeway earlier.

Therefore, I support the suggestion that a committee should be appointed. An administrative enquiry will not do. I know how this Government treated the administrative enquiry of a person who is the Chairman, Board of Revenue, Uttar Pradesh. The Prime Minister of the country says that this is an IAS officer's enquiry and that it is the Board of Revenue ...*(Interruptions)*

I am pointing out the way in which the officers are being treated by this Govern-

ment. All these things have led to the collapse of the administration. What I am saying is not irrelevant.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI V. NARAYANASAMY): Would you please conclude now?

SHRI TRILOKI NATH CHATURVEDI: Yes, I will conclude, Sir. Thank you very much.

The entire nation is work up on this. This kind of official collapse has taken place here because there is no control of anybody. Nobody knows what is happening. Could the Home Secretary not go there? Could the Special Secretary not go there? How many times has the Special Secretary flown earlier by plane? How many times has he flown by helicopter?

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI V. NARAYANASAMY): Thank you; I will call the next person.

SHRI TRILOKI NATH CHATURVEDI: The last suggestion I want to make is that from a long-term angle ways and means should be found to avert tragedies of the kind that occurred in Amarnath and other places. I think one of the suggestions that have been made is that a public trust supported by the Government etc. should be established. But, I think, a committee...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI V. NARAYANASAMY) : You have already mentioned that point. Don't repeat the same point. Kindly take your seat. You have already mentioned that a committee should be appointed. ...*(Interruptions)*

You are not concluding. You are going on repeating the points.

SHRI TRILOKI NATH CHATURVEDI : A Joint Committtee of the two Houses should be appointed to take note of these problems, to make suggestions and to hold the persons who are responsible at this moment.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI V. NARAYANASAMY): Thank You very much.

श्री सतीश प्रधान (महाराष्ट्र): उपसभाध्यक्ष महोदय, हमारे यहां मराठी में एक कहावत है "पुढच्यास ठेच मागचा शहाणा"

इसका अर्थ है कि आगे चलने वाले आदमी के पांव में जब पत्थर लग जाता है तो पीछे आने वाला आदमी स्याना बन जाता है। उसको तकलीफ नहीं होती, वह सीधे ढंग से रास्ता चल सकता है। हमारे यहां इस विषय में इतनी कैलामिटीज होने के बाद भी सरकार ने आज तक इनके रोकने के बन्दोबश्त क्यों नहीं किये, यह बात मेरी समझ में नहीं आती है। अभी यहां बहुत से मेम्बर्स इसी विषय पर काफी बोले हैं इसलिए मैं उन सब बातों को यहां दोहराना नहीं चाहता हूं। लेकिन यह बात अवश्य बताना चाहता हूं कि अमर नाथ की यात्रा पर जाने वाले हर यात्री से 50-50 रुपये लिए गए है। ये रुपये उनसे क्यों लिये गये? यह कर लेने की क्या आवश्यकता थी? हम इस विषय में जानकारी चाहते हैं और साथ ही यह भी जानना चाहते हैं कि वहां जाने वाले यात्रियों के लिए रेलवे द्वारा खास व्यवस्था क्यों नहीं की गई? अनेक जगहों पर हिन्दुस्तान में बहुत सारे कार्यक्रम होते हैं। उन कार्यक्रमों में जाने के लिए रेलवे का स्पेशल अरेंजमेंट होता है, स्पेशल बसें जाती है। वहां पर लाखों की तादाद में लोग जाने वाले हैं इसका अंदाजा होने के बाद भी रेलों की व्यवस्था क्यों नहीं की गई? क्या उसमें कोई अड़चन आ गई थी यह भी समझने की आवश्यकता है।

हम रोज टी० वी० के ऊपर सेटेलाइट के माध्यम से हवामान का अंदाजा सब जगह बताते है, सब लोगों को कहते हैं। दुनिया में सब जगह पर यह अंदाजा लगने के बाद ही वे यह तय करते है हम आज यह कार्यक्रम करेंगे या नहीं करेंगे। तभी वे निर्णय लेते हैं। इतना सब होने के बाद, इतना होने के बावजूद कि वहां पर आपत्तिजनक स्थिति होने वाली है कोई इंतजाम नहीं किया गया। मैं जानना चाहता हूं कि क्या आपको मालूम हुआ था या नहीं? यदि मालूम हुआ था तो इस विषय में आपने क्या कदम उठाए? यह सरकार को कहना आवश्यक है क्योंकि जब आपकों मालूम था कि वहां पर तकलीफ होने वाली है तो उसका बंदोबस्त क्यों नहीं किया? वहां पर इतना होने के बाद भी, आज पांचवा

दिन है, पांच दिन तक वहां से लोगों को बाहर निकालने के लिए सरकार ने क्या व्यवस्था करने की कोशिश की है? चार दिन में आपने क्या किया, इसको बताना भी सरकार की जबावदारी है और अगर नहीं किया तो क्यों नहीं किया? आज के अखबारों से पता चलता है कि वहां से लोगों को लाने की कोशिश की जा रही है।

महोदय, इस तरह के लोगों को जो कम्पनसेशन दिया जाता है उसे बढ़ाने की आवश्यकता है। कम से कम उन्हें दो लाख से ज्यादा कम्पनसेशन देने की आवश्यकता है।

मैं दो ही बात कहना चाहता हूं वहां पर जो अनाउन्समेंट की व्यवस्था थी वह ठीक ढंग की नहीं थी। इतनी सारी तादात में लोग वहां आने वाले है, इसको देखते हुए अनाउन्समेंट की व्यवस्था ठीक होनी चाहिए थी। हमारे राज्यसभा में भी बहुत सारे टाइम अनाउन्समेंट की व्यवस्था बिगड़ जाती है तो वहां हालत क्या होगी। इसलिए वहां पर इस मामले में सतर्क होने की आवश्यकता थी।

पुलिस नियंत्रण कक्ष जो है वहां से इस विषय पर ठीक ढंग से जानकारी नहीं मिल रही है। दिल्ली कक्ष अभी ठीक ढंग से कार्यरत नहीं है। पांच दिन होने के बाद इस कक्ष को कार्यरत रहना आवश्यक था। लेकिन अभी तक यह कार्यरत ही नहीं है। यह क्या बात है? ऐसा क्यों है? जनबूझकर इस विषय पर इस तरह से गलत ढंग से जो हो रहा है, सरकार इसके बारे में बताये।

आखिर में मैं कहना चाहूंगा कि सरकार कम्पनसेशन बढ़ाए और एक ज्वाइंट पार्लियामेंटरी कमेटी का निर्माण किया जाए और जिन अधिकारियों या पदाधिकारियों ने इस विषय में अपनी जिम्मेदारी ठीक ढंग से नहीं निभाई है उनके ऊपर कड़ी से कड़ी कार्यवाही की जाए।

श्री गया सिंह (बिहार): उपसभाध्यक्ष महोदय, इस गंभीर घटना के संबंध में जो चर्चा चल रही है, मैं भी अपने को उससे जोड़ते हुए एक बात कहना चाहता हूं कि आज इस मुल्क में इस तरह की घटनायें कई राज्यों में कई जगहों पर हो रही है। यह एक ऐसा विषय है जो राष्ट्रीय विषय है। इतने लोगों की जानें चली गई तो इससे बचने का क्या रास्ता हो सकता है, इस पर हम विचार करें। इसका कोई सही रास्ता निकाला जाए इसमें कोई दो राय नहीं है। लेकिन अगर लाशों के साथ हम राजनीति करने लगें तब तो अपनी अपनी बात होगी इसका कोई सही सोल्यूशन नहीं हो सकता। ज्वाइंट पार्लियामेंटरी कमेटी बने या कोई भी कमेटी बने—क्योंकि अचानक यह चीज नहीं हुई, पिछले नौ सालों से वहां पर राष्ट्रपति शासन है। अभी जैसा चतुर्वेदी जी ने कहा कि 6 किलोमीटर रोड पर इतना खर्चा हर साल ठेकेदार से कराया जा रहा है, हर साल वहां पर तीर्थ यात्री जाते हैं, इन सब का जवाब सरकार देगी लेकिन मैं कहना चाहता हूं कि यह जो घटना घटी है इसकी पुनरावृत्ति नहीं होनी चाहिए। यह केवल अमरनाथ का सवाल नहीं है। देश में कई ऐसी जगह है जहां कुछ न कुछ होता रहता है। जैसे राजगीर बिहार में है। वहां हर दो साल में एक बड़ा मेला लगता है। वहां कुछ न कुछ घटना हो जाती है। लोग मर जाते है, कहीं ला एंड आर्डर का सवाल भी उठता है तो इसके लिए हाउस में ऐसे सुझाव लाये जाये, श्री अहलुवालिया जी को तो होम मिनिस्टर से एलर्जी है कि इस्तीफा दो।

SHRI S.S. AHLUWALIA: I take serious objection to this. He should withdraw his words.

गलत बात है। आप बात को घुमा रहे हैं **(व्यवधान)**

श्री गया सिंह: चलिये, आपकी बात नहीं, उन लोगों ने भी इस्तीफे की बात कही है। **(व्यवधान)**

प्रो० विजय कुमार मल्होत्रा: मिनिस्टर को इस्तीफा देना चाहिये, इसमें कोई शक नहीं है। **(व्यवधान)**

श्री एस० एस० अहलुवालिया: अगर कोई सांसद सदन में अपनी बात उठाता है तो वह किसी का व्यक्तिगत झगड़ा नहीं है या किसी से व्यक्तिगत एलर्जी नहीं है। वह अपनी मांग रखता है, यह उसका अधिकार है। वह जनता की आवाज उठा रहा है **(व्यवधान)**

आप अपनी बात वापिस लीजिये (व्यवधान)

श्री गया सिंह: हर किसी को अपनी बात कहने का अधिकार है भाई। **(व्यवधान)**

श्री एस० एस० अहलुवालिया: आपने जो शब्द कहे, वापिस लीजिये **(व्यवधान)**

श्री गया सिंह: किस बात को वापिस लूं? **(व्यवधान)**

श्री एस०एस० अहुवालिया: आपने जो बात कही। **(व्यवधान)**

श्री गया सिंह: अच्छा अगर आपको कोई तकलीफ हुई हो... **(व्यवधान)**

श्री एस० एस० अहलुवालिया: आपने कहा क्या है? **(व्यवधान)**

श्री गया सिंह: मैंने कहा कि आपको एलर्जी है **(व्यवधान)**

श्री एस० एस० अहलुवालिया: मुझे किसी से एलर्जी नहीं है। **(व्यवधान)**

श्री गया सिंह: नहीं है तो अच्छा है, नहीं होनी चाहिये **(व्यवधान)**

श्री एस० एस० अहलुवालिया: मुझे किसी से हलर्जी नहीं है। मुझे एलर्जी है तो कार्य प्रणाली से है। जो गलत प्रणाली है, उससे एलर्जी है। **(व्यवधान)**

THE-CHAIRMAN (SHRI V. NARAYANASAMY): Mr Ahluwaliaji he has withdrawn it.

श्री गया सिंह: मैं सिर्फ कहना चाहता हूं कि आज जो अमरनाथ की घटन हुई इसकी पुनरावृत्ति नहीं हो इस पर जरूर चर्चा होनी चाहिए। मैं दोहराना नहीं चाहता हूं। मुर्दे के साथ राजनीति करने की बात छोड़ देनी चाहिए। जहां तक कंपनसेशन का सवाल है। **(व्यवधान)**

श्री एस० एस० अहलुवालिया: इसमें कोई राजनीति नहीं है। इसमें कोई पोलिटिक्स नहीं है। **(व्यवधान)** सच्चाई सामने आनी चाहिये। अगर कोई यह कहे कि यह राजनीति की बात है तो चेयरमैन ने इस मुद्दे को जो परिमट किया है इस सदन में ज़ीरो आवर में उठाने के लिए क्या हमारी राजनीति में वे भी हिस्सेदार थे। आप राजनीति काहे को कह रहे है? एक मुद्दा जो सदन में उठाया गया है, सरकार का ध्यान आकर्षित किया गया है, कोई भी बहस की जाती है, सरकार का ध्यान आकर्षित करने के लिए की जाती है, सरकार को आगाह करने के लिए की जाती है। **(व्यवधान)**

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI V. NARAYANASAMY): Mr. Gaya Singh kindly conclude.

श्री गया सिंह: इस सिस्टम की जो फेलयर है, एडमिनिस्ट्रेशन की जो फेलयर है, सुरक्षा की व्यवस्था तो कर दी लेकिन यह भी अन्दाज़ा नहीं लगा कि मौसम कैसा होगा और साथ साथ यह भी अन्दाज़ा नहीं लगा कि इस साल कितने तीर्थ यात्री जाने वाले है। अगर यह भी अनुमान होता है कि पिछले साल के मुकाबले इस साल ज्यादा तीर्थ यात्री होंगे। **(व्यवधान)**

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI V. NARAYANSAMY): Mr. Ahluwaliaji , he is going to conclude now.

श्री गया सिंह: मैं सुझाव दे रहा हूं। **व्यवधान**

श्री एस० एस० अहलुवालिया: क्या सरकार चल रही है जिसको यह अन्दाज़ा नहीं है कि कितने तीर्थ यात्री पुरे हिन्दुस्तान से आ रहे हैं **(व्यवधान)** क्या सरकार चल रही है?

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI V. NARAYANASAMY): The Government would reply to it. You make our point.

श्री एस० एस० अहलुवालिया 50 रुपये पर-हैड जो अकाऊंट लगाया था, वह किस हिसाब से लगाया था?

श्री गया सिंह: आप माननीय मंत्री जी से पूछ लीजिये **(व्यवधान)** मुझ से क्यों पूछ रहे हैं **(व्यवधान)**

श्री एस० एस० अहलुवालिया: उत्तर प्रदेश में गर्वनर का राज है। वह डायरेक्टली सेंट्रल गवर्नमेंट का है। क्या आपको पता नहीं था कि इतने आदमी बसों में गये? **(व्यवधान)**

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI V. NARAYANASAMY): The hon. Member has got his views, let him express them.

श्री गया सिंह: उपसभाध्यक्ष महोदय, मेरा सुझाव यह है कि इस तरह की घटना की पुनर्रावृत्ति न हो न केवल अमरनाथ की यात्रा में बल्कि पूरे देश के लिए एक ऐसी योजना हो जिसमें प्रिवेंटिव मेज़र्ज़ लेने के लिए सरकार को इस हाउस के माध्यम से सुझाव जाए और उस पर विचार कर के एक राय बनाई जाए और विभिन्न राज्यों को इस संबंध में गाइडलाइंस हो जिसमें केन्द्रीय सरकार और राज्य सरकारों दोनों का सहयोग हो तभी इस तरह की घटनाओं से हम बच सकते हैं।

श्री लक्खीराम अग्रवाल: उपसभाध्यक्ष महोदय, अमरनाथ में इतनी बड़ी घटना घटी है। अमरनाथ की तीर्थ यात्रा आज कोई पहली बार शुरू नहीं हुई है। इस देश में सैकड़ों वर्षों से यह तीर्थ यात्रा जारी है और

लाखों लोग इस तीर्थ यात्रा में जाते हैं। यह देश करोड़ों लोगों का धर्म के प्रति आस्थावान लोगों का देश है और देश के अनेक भागों में प्रत्येक वर्ष लाखों तीर्थ स्थानों में जाते हैं। बहुत से तीर्थ स्थान दुर्गम स्थलों पर हैं अमरनाथ उनमें से एक है। मैं सरकार से यह जानना चाहता हूं कि इतने दुर्गम स्थान पर इस मौसम में तीर्थ यात्रा पर लाखों लोग जाते हैं, अगर उनके जीवन के बारे में चिन्ता हो, जैसे कि बताया गया कि बहुत सी सड़कें तो ढाई फुट चौड़ी है और लाखों लोग का आना-जाना उस पर होता है, क्या वह रोड इस युग में सरकार द्वारा बनायी नहीं जा सकती है? जब लाखों लोग जाने वाले थे, अगर उनके जीवन की चिंता हो, यह कहते हैं कि वहां शिविरों में जगह नहीं थी, क्या अच्छे शिविर नहीं बनाए जा सकते थे, बड़े शिविर नहीं बनाए जा सकते थे? क्या दवाओं का प्रबन्ध नहीं किया जा सकता था? मेरी समझ में यह बात नहीं आती कि जिस देश के करोड़ों लोग धर्म के आस्थावान लोग तीर्थ यात्रा पर जाते हैं, उनके प्रति सरकार उदासीन क्यों है? मेरा पहला सुझाव तो यह है कि इस प्रकार के दुर्गम तीर्थ स्थलों पर सरकार कोई परमानेंट, अच्छी, सुगम व्यवस्था करे जिससे तीर्थ यात्री अपने धार्मिक कार्य पूरी तरह से कर सकें। दूसरी बात मैं कहना चाहता हूं कि आखिर में इतनी बड़ी त्रासदी में सैकड़ों लोग मर गए लेकिन आज हमारे कुछ ऐसी भाई हैं जिनको गृह मंत्री के बारे में बोलने पर उत्तेजना आती है। मैं आपको कहना चाहता हूं कि कश्मीर में आज राष्ट्रपति शासन है। केन्द्र सरकार के अधीन है। अगर गृह मंत्री की जिम्मेदारी नहीं है तो किस की जिम्मेदारी है। वहां सैकड़ों लोग मर गए और वहां के राज्यपाल दो तीन दिन से यहां प्रधान मंत्री के साथ डिनर खाने बैठे रहे और वहां सैकड़ों लोग मरते रहे। उनको वहां जाने की चिंता नहीं रही। यहां मुख्य सचिव भी यहां बैठे रहे (समय की घंटी) एक मिनट लूगा इसके कारण सेना जो इस प्रकार की आपदा के कार्यक्रमों में हमेशा प्रशंसनीय कार्य करती है वह सेना पूरी तरह से सहायता के लिए तैयार थी लेकिन उसको 40 घंटे तक कोई आदेश देने वाला नहीं था। मेरा अनुरोध है कि क्या इस प्रकार के गैरजिम्मेदार गवर्नर को वहां बनाए रखने की जरूरत है जहां सैकड़ों लोगों की जान जाए और वे यहां डिनर के लिए बैठे रहें वहां जाने की हिमाकत न करें, वहां जाने की जरूरत न समझें। इसलिए मेरी मांग है कि वास्तव में इस मामले में संसद की एक समिति बनानी चाहिए। न केवल इसमें सारे तथ्य सारे जिम्मेदारियां आनी चाहिए बल्कि मैं एक सुझाव देना चाहूंगा कि चाहे वे किसी भी धर्मावलम्बी की तीर्थ स्थान हो साल में जहां लाखों लोग जाते हों उन धार्मिक स्थलों में भी परमानेंट व्यवस्था उनकी सारी सुविधाओं की दृष्टि से भी मुकम्मल होनी चाहिए।

श्री मूलचन्द मीणा (राजस्थान) उपसभाध्यक्ष महोदय, अमरनाथ यात्रा की जो दुर्घटना हुई है, यह घटना दर्दनाक घटना है। सरकार की ओर से कोई व्यवस्था न होना इसके पीछे एक कारण रहा है। हर साल लाखों आदमी इस अमरनाथ की यात्रा में जाते हैं। घटना घटने के बाद भी लाखों आदमी उसके अंदर फंसे हैं। उनके इलाज के लिए डाक्टर और दवाई की व्यवस्था नहीं है, सही स्थानों पर सुरक्षित पहुंचाने के साधन नहीं है। वहां अनेक प्रांतों से लोग गए हुए हैं। राजस्थान के भी कुछ लोग गए। उनके घर वाले, उनके रिश्तेदार मुझे टेलीफोन करके पूछना चाहते हैं कि हमारे लोगों का क्या हाल है, जीवित है, सुरक्षित है या नहीं, या मर गए हैं। इसकी इत्तिला देने के लिए कंट्रोल रूम कहीं भी जवाबदारी नहीं निभा रहा है। मुझे भी इस बात की निराशा हुई। राजस्थान से गए हुए लोगों में राजस्थान के एक भूतपूर्व मंत्री भी थे जिनके घर वालों ने मुझे टैलीफोन किया। मैंने जानकारी चाही लेकिन कोई जानकारी नहीं मिली कि वे जीवित है या नहीं। यह व्यवस्था तो गवर्नमेंट की है। गवर्नमेंट उनको लेने के लिए स्पेशल ट्रेन भी लगा सकती है। स्पेशल हेलीकाप्टर और हवाई जहाज भी लगा सकती है। लोगों को निकालकर ला सकती है और होम मिनिस्टर साहब चार दिन बाद में क्योंकि आज सदन चालू होने वाला था, संसद चलने वाली थी 26 तारीख हो इसलिए आज गए। कल ही चले जाते, आज सुबह आकर जवाब दे देते। लेकिन सरकर इन जिम्मेदारियों को ग्रहण करने वाली नहीं है। उज्जैन और हरिद्वार के अंदर ऐसे घटनाएं हुई। वे धार्मिक स्थल हैं। अमरनाथ की यह दूसरी घटना हुई। इसी प्रकार की और ..(समय की घंटी) भी घटनाएं हुई है। आज लोगों को यह लगने लगा है कि तीर्थ स्थलों में जाने वाले लोगों की सुरक्षा के लिए, उनकी व्यवस्था के लिए सरकार अपनी जिम्मेदारी नहीं निभा रही है। इसलिए आज जे०पी०सी० की बात उठी है क्योंकि कई घटनाएं एक साथ दिन प्रति दिन होती जाती है और हाउस के अंदर होम मिनिस्टर साहब आते हैं वक्तव्य पढ़ देते है, जवाब दे देते है लेकिन कुछ नतीजा नहीं

निकलता है। इसलिए मैं चाहता हूं कि जो भी अधिकारी जिम्मेदार है इस यात्रा में उनके खिलाफ सख्त कार्यवाही शीघ्र हो, उनका सस्पेंशन तो आज ही हो.. **(समय की घंटी)**

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI V. NARAYANASAMY): Meenaji, kindly conclude.

श्री मूलचन्द मीणा: जिससे कि भविष्य में आने वाले यात्रियों की व्यवस्था में प्रशासन लगाया जाए।

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI V. NARAYANASAMY): There is no new point. The same points you are repeating. So, you kindly conclude. Most of the Members are repeating the same points.

श्री मूलचन्द मीणा: सर, मैं यह भी कहना चाहूंगा कि सरकार यह स्पष्ट करे कि 160 की मृत्यु हुई या ज्यादा की हुई है? सुनने में यह आ रहा है कि चार सौ, पांच सौ के करीब लोगों की जाने चली गई है। मुआवजे की बात सब लोगों ने कही। मुआवजा तो जब हम बिहार के अंदर एक सेना के लोग दूसरी सेना पर हमला करें, आतंककारी लोग एक-दूसरे पर हमला करें उनको दो-दो लाख रुपये दे दिए जाएं मुआवजे के रूप में ...**(व्यवधान)** उनको दो-दो लाख रुपये दे दिए जाएं और अमरनाथ यात्रा भगवान शिव की पूजा, शिव की अराधना करने वाले लोगों की मृत्यु हो जाए, उनके घर वाले, उनके बाल-बच्चे अनाथ हो जाएं, उनके लिए 50-50 हजार रुपया कम होता है। इसलिए उनका यह मुआवजा बढ़ाकर ...**(व्यवधान)** पांच लाख और दो लाख के बीच में समथिंग कर दिया जाए जिससे कि जो अनाथ हुआ परिवार है वह अपना जीवन कायम कर सके। यही मैं निवेदन करता चाहता हूं।

श्री ईश दत्त यादव (उत्तर प्रदेश): मान्यवर उपसभाध्यक्ष जी, अमरनाथ यात्रा में जो दुर्भाग्यपूर्ण और हृदय विदारक घटना हुई इससे हम सब लोग पूरे सदन के और पूरा देश चिंतित है। माननीय सदस्यों ने इस घटना के संबंध में जो चिंता प्रकट की है मैं भी उनसे अपने को सम्बद्ध करता हूं। मान्यवर, जो इस दुर्घटना में मरे है उनके प्रति अपनी ओर से और अपनी समाजवादी पार्टी की ओर से मैं श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और मैं सरकार से यह भी मांग करता हूं कि जो लोग मरे है उनके आश्रितों को दो-दो लाख रुपये मुआवजा दिया जाए। जो घायल हुए है उनके उपचार की व्यवस्था की जाए, उनकी आर्थिक सहायता की जाए। जो लोग वहां फंसे पड़े हैं सरकार को चाहिए और सरकार से मांग करता हूं सरकार प्रयास भी कर रही होगी, इन लोगों को तत्काल सुरक्षित वापस ले आया जाए। मान्वयर, यह दैवी घटना है। ...**(व्यवधान)** यह दैवी घटना अधिक बरसात की वजह से, भू-स्खलन की वजह है और अन्य कारणों से हुई है। ऐसे घटनाएं पूर्व में भी कुंभ मेले में, उज्जैन में, हरिद्वार की हर की पैड़ी की घटनाएं भी हुई थीं। इस तरह की घटनाएं मान्यवर, दैवी आपदा होती है। मैं इस घटना के प्रति चिंता प्रकट कर रहा हूं, लेकिन मैं यह नहीं चाहता कि इसको राजनीतिक स्वरूप दिया जाए। यह इस सदन में चिंता का विषय होना चाहिए न कि आपसी विवाद और राजनीतिक लाभ लेने की बात होनी चाहिए। श्री टी०एन० चतुर्वेदी जी का मैं बहुत सम्मान करता हूं। प्रधान मंत्री उत्तर प्रदेश में गए, कल गए, इस घटना से उसका क्या मतलब, केवल राजनीतिक स्वरूप इसको देना यह सब से दुखद पहलू मैं इसको मानता हूं। ...**(व्यवधान)**

श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी: मैं भी ईश दत्त जी का बहुत आदर करता हूं। ...**(व्यवधान)**

I am talking about the collective responsibility, the collapse of the State administration and the collapse of administration at the Government level ...*(Interruption)*....

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI V. NARAYANASAMY): No, no; that point you have already made. Let him make his point.

श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी: तो फिर मुझे आप स्पष्टीकरण का मौका देंगे। ...**(व्यवधान)**

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI V. NARAYANASAMY): I do not want any explanation from you. Let him make his point.

SHRI TRILOKI NATH CHATURVEDI: I owe it to my conscience and I think, I owe it to the nation.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI V. NARAYANASAMY): No, no; Chaturvediji, you have made your point. Let the

hon. Member make his point.

कोलैक्टिव रेसपासिबिलिटी के ऊपर जो वह कह सकते हैं ...(व्यवधान) मैं भी उनका बड़ा आदर करता हूं। ..(व्यवधान)

उपसभाध्यक्ष (श्री वी० नारायणसामी): काइंडली कन्क्लूड।

श्री ईश दत्त यादव: मैं कनक्लूड कर रहा हूं। मैं निवेदन कर रहा था कि उस पक्ष के लोगों की भावनाएं मैं बड़े ध्यान से सुन रहा था। चिंता कम, राजनीति ज्यादा प्रकट हो रही थी उनके विचारों में, मैं इस विचार से सहमत नहीं हूं। जो घटना हुई है इस पर चिंता प्रकट करनी चाहिए और सरकार को सहायता देनी चाहिए। सरकार को चाहिए अगर कोई लैप्सेस हुए हैं अधिकारियों से जो लोग वहां जिम्मेदार थे, जो लोग मौजूद थे, मान्यवर, मेरी जानकारी है हर तीर्थ स्थल पर गाइडलाइन होती है। सैंकड़ों साल पुरानी गाइडलाइन होती है कि कहां क्या व्यवस्था होनी चाहिए। अगर इस तरह की व्यवस्था में कहीं कोई खामी है तो सरकार को चाहिए कि इसकी जांच कराए और लोगों को दंडित करे ताकि इस तरह की घटनाओं की पुनरावृत्ति फिर न हो सके। इन्हीं शब्दों के साथ, मान्यवर, मैं पुनः इस दुर्भाग्यपूर्ण घटना पर, हृदय-विदारक घटना पर चिंता प्रकट करते हुए मृतकों के प्रति अपनी ओर से और अपनी पार्टी की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। बहुत-बहुत धन्यवाद।

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI V. NARAYANASAMY): The remaining part of the Zero Hour submissions will be take up tomorrow. There is a Special Mention by Shri Govindram Miri which will be taken up after lunch-break. Now the Minister of State for Parliamentary Affairs wants to make a request.

DR. U. VENKATESWARLU: Sir, I want to make a request. There are two Bills listed for discussion after the House resumes after lunch. I want to make a request that instead of these two Bills, the General Discussion on the Budget may kindly be taken up.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI V. NARAYANASAMY): I think the House agrees and we will have the General Discussion on the Budget instead of these two Bills. These Bills will be taken up after some time.

Now the House is adjourned for one hour.

The House then adjourned for lunch at thirty-one minutes past one of the clock.

The House reassembled after lunch at thirty-five minutes past two of the clock, THE VICE-CHAIRMAN (MISS SAROJ KHAPARDE) in the Chair.

SPECIAL MENTION

Child-running Racket in India

SHRI GOVINDRAM MIRI (Madhya Pradesh): A newspaper report details a well-organised child-running racket which is thriving in different parts of the country, particularly in West Bengal. The racketeers entice young boys from poor families and take them to the Middle East to cater to the demand there which is mainly for the camel race.

These young boys are tied behind the racing camel and their fearful shrieks and mercy appeals are believed to make the camels go berserk enough to furiously gallop towards the winning post.

This cruel pastime which reduces the children to the status of passive racing instruments was brought to light some years ago in Mumbai with the police uncovering a well-organised racket. Last month a Bangladeshi national was arrested in Calcutta airport while